हंस और कछुआ (पाठ - 3)

⇒ शिक्षा - हमें संकट के समय मौन रहना भी सीख है। हमें बिना बात बेकार की बातों में न पड़कर अपनी लक्ष्य पर बढ़ना चाहिए।

⇒ सारांश (80-100 शब्दों में)

मगध देश में एक फुल्लोत्पल नामक तालाब में संकट और विकट नामक दो हंस और एक कछुआ रहता था। वे अच्छे मित्र थे। एक दिन कुछ मछुआरों की नज़र तालाब पे पड़ी। उन्होंने तय किया की वे अगले दिन आकर तालाब की मछलियां और कछुए को पकड़ेंगे। यह बात हंसों ने सुनकर कछुए और मछलियों को बता दी। कछुआ यह सुनकर घबरा गया। हंसों ने एक उपाय बताया की वे लकड़ी के किनारों को

पकड़ेंगे और कछुआ मुँह बीच से पकड़ेगा। यह
कर वे उड़ गए। कुछ बच्चे पतंग उड़ा रहे थे
वे कछुए को पकड़ने की बात कर रहे थे।
यह सुन कछुए को गुस्सा आया और उसने
कुछ बोलने के लिए मुँह खोला और नीचे
गिरकर मर गया।

—— x ——